सरसों का मृदुरोमिल आसिता रोग

पत्तियों की निचली सतह पर बैंगनी–भूरे रंग के धब्बे बनते हैं जो बाद में बड़े हो जाते हैं वहीं से यह रोग बैंगनी रंग की मृदुरोमिल (वृद्धि) रुई के समान दिखाई देती है। रोग नियंत्रण हेतु 250–300 ग्राम मैंकोजेब एम–45 150 लीटर पानी का प्रति एकड़ उपयोग करें।

सरसों का स्क्लेरोटिनिया तना गलन रोग

इस रोग का प्रभाव तने पर दिखाई देता है। रोग के कारण पौधे के तने व शाखाएं गल कर टूट जाती हैं। रोग नियंत्रण हेतु बीजों को कार्बेन्डाजिम 50 WP, 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीज उपचारित करें व बुबाई के 60–70 दिन बाद कार्बेन्डाजिम 50 WP को 250–300 लीटर पानी में मिलाकर फसल में छिड़काव करें।

कटाई

सरसों में तेल की अधिक मात्रा तथा अधिक उत्पादन के लिए सही समय पर फसल काटना बहुत आवश्यक है। कटाई के वक्त फसल कम या बहुत अधिक पकी नहीं होनी चाहिए। जब 90 प्रतिशत बीज भूरे रंग में बदल जाएं तो समझ लेना चाहिए कि फसल कटने के लिए तैयार है। सरसों को घर में रखने से पहले या बाज़ार में ले जाने से पहले 4–5 घंटे छांव में सुखा लें अन्यथा बीज में ज़्यादा नमी होने के कारण बाज़ार में कम भाव मिलेंगे और भण्डारण में भी नुकसान हो सकता है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

सदन बाथमः 8957648577, पुष्पेंद्र कुमारः 8505021994

खैरथल–तिजारा, राजस्थान–301404

K+S

सरसों की खेती

SEHGAL FOUNDATION

परिचय

सरसों राजस्थान एवं हरियाणा की एक बहुत महत्वपूर्ण तिलहनी फसल है। सरसों की फसल कम लागत व कम पानी में ज्यादा आमदनी देती है। यह सिंचित क्षेत्रों में एवं संरक्षित नमी के बारानी क्षेत्रों में की जा सकती है। यह फसल कम लागत और कम सिंचाई सुविधा में भी अन्य फसलों की तुलना में अधिक लाभ प्रदान करती है इसीलिए रबी के मौसम में ज्यादातर कृषि क्षेत्र में सरसों की बुवाई होती है।

खेत की तैयारी

सरसों की अच्छी फसल लेने के लिए खेत की तैयारी पर ध्यान देना बहुत आवश्यक है। सरसों की खेती बारानी एवं सिंचित दोनों प्रकार से की जाती है। बारानी खेती के लिए खेत को खरीफ में खाली छोड़ा जाता है। पहली जुताई वर्षा ऋतु में मिट्टी पलटने वाले हल से करें तथा समय–समय पर खेत की स्थिति के अनुसार 4–6 जुताई करें। सिंचित क्षेत्र के लिए भूमि की तैयारी बुवाई से 3–4 सप्ताह पूर्व करें। दीमक व अन्य कीड़ों के लिए रोकथाम हेतु बुवाई से पूर्व अंतिम जुताई के समय क्यूनालफॉस डस्ट 1–5 प्रतिशत 6–8 किलोग्राम डालें।

बीज की बुवाई, मात्रा एवं समय

बीज की बुवाई सीड ड्रिल मशीन की सहायता से सीधी लाइन में करें। लाइन से लाइन की दूरी 30 सेंटीमीटर तथा पौधे से पौधे की दूरी 10–15 सेंमी व बीज को 3–4 सेंटीमीटर की गहराई पर बोएं। एक एकड़ क्षेत्र में एक किलोग्राम बीज की ही बुवाई करें। बीज की अधिक मात्रा से कुल उपज पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। बारानी क्षेत्र में सरसों की बुवाई का सही समय 15 सितम्बर से 15 अक्टूबर तथा सिंचित क्षेत्रों के लिए अक्टूबर के अन्त तक होता है।

बीज उपचार

फसल को रोग व कीड़ों से बचाव हेतु बीज का उपचार करना जरूरी है। सरसों के बीज को निम्न प्रकार से उपचारित करें।

बीज एवं भूमि हेतु	नियंत्रण के उपाय	मात्रा
बीज जनित रोग हेतु	बीटावैक्स, साफ, कैपटान या थायरम	2 ग्राम दवा / किलो बीज
कीट– दीमक, पेन्टेड बग व आरा मक्खी हेतु	गाउचो (ईमीडाक्लोपिड 600 FS) (48 प्रतिशत w/w) या	9 मिली0 दवा / किलो बीज
	(फिप्रोनिल 5 प्रतिशत एस0सी0)	6–8 मिली0 दवा / किलो बीज

खाद एवं उर्वरक

सरसों की अच्छी फसल लेने के लिए प्रति एकड़ 50 किलो यूरिया, 18 किलो डी0ए0पी0, 5 किलो पोटाश, 2.5 किलो जिंक (33 प्रतिशत), 500 ग्राम बोरान, 2 किलो फेरस सल्फेट व 4 किलो सल्फर का प्रयोग करना चाहिए। यह सभी खादें बुवाई से पूर्व खेत में मिला दें। ध्यान रहे बुवाई से पहले 10 किलो यूरिया खेत में मिलाना है व यूरिया की दूसरी मात्रा 20 किलो पहली सिंचाई के समय देनी चाहिए। उर्वरक का उपयोग हमेशा मिट्टी जांच के बाद करें।

किस्में

किसान को सलाह दी जाती है कि वो सरसों के प्रमाणित व उन्नत किस्मों के बीजों का ही इस्तेमाल करें। जो निम्न प्रकार हैं –

हाइब्रिड बीज – पाइनियर 45 एस 46, एडवान्टा कोरल 432, हाईटेक –7701, श्रीराम–1666.

प्रमाणित बीज – वरुणा (टी–59), आर. जी. एन.–13 लक्ष्मी, पूसा बोल्ड।

सिंचाई

सरसों में दो बार सिंचाई बहुत आवश्यक है। पहली सिंचाई फूल आने के दिनों पर (लगभग 40–45 दिन) तथा दूसरी सिंचाई फलियों के बनने के समय (70–75 दिनो में) करनी चाहिए। अगर एक ही पानी की उपलब्धता है तो फूल आने के समय ही सिंचाई करें।

खरपतवार नियंत्रण

सरसों की फसल में बुवाई के 20–25 दिन बाद खरपतवार निकालने का कार्य करें साथ ही घने पौधों की छटाई भी कर दें। सिंचाई के बाद निराई गुड़ाई करें। रासायनिक दवा से खरपतवार नियन्त्रण हेतु बुवाई के तुरन्त बाद फसल उगने से पहले खरपतवारनाशी पेंडामिथालिन(स्टाम्प) 1 लीटर दवा को प्रति एकड़ 200–250 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

सरसों के प्रमुख कीट व उनका नियंत्रण

पेन्टेड बगः यह बहुत छोटा लाल रंग का होता है जिसको पेंटेड बग कहते हैं। यह सरसो में जमने के तुरन्त बाद पौधों पर आता है और रस चूसता है जिससे पौधे सफेद पड़कर मरने लगते हैं। इसकी रोकथाम हेतु क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत या मैलाथियान 5 प्रतिशत चूर्ण 8 से 10 किग्रा / एकड़ की दर से प्रातः या सांयकाल भुरकाव करें।

माहू / चेपाः माहू हरे या पीले रंग का रस चूसने वाला कीट है जिससे पत्तियां पीली पड़ कर मर जाती हैं। यह पत्ती व फली से रस चूसता है। इसका मुख्य आक्रमण दिसम्बर के आखिरी सप्ताह तथा जनवरी तक होता है। इसकी रोकथाम हेतु 80–100 मिलीलीटर प्रति एकड़ कॉन्फीडोर इमिडाक्लोप्रिड 17.8 SL, 150–200 लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें।

आरा मक्खीः यह काले रंग की मक्खी है जो अक्टूबर व नवम्बर माह मे अधिक सक्रिय रहती है। यह नयी फसल में 10 प्रतिशत तक नुकसान करती है। यदि 1 लार्वा / पौध दिखाई दे तो क्यूनालफास (इकालक्स) 25 प्रतिशत 500 मिलीलीटर / एकड़ / 150–200 लीटर पानी के साथ छिड़काव करें।

सरसों के प्रमुख रोग व बीमारी

अल्टरनेरिया ब्लाईटः सरसों में यह बीमारी पत्तों में आती है। इसमें काले रंग के धब्बे पहले पत्तों पर दिखाई देते हैं। यदि कन्ट्रोल न करें तो फलियों में भी आते हैं। इसके नियंत्रण के लिए मैंकोजेब एम –45 दवा को 2–5 ग्राम / लीटर साफ पानी में मिलाकर फसल में छिड़काव करें।

सफेद रतुआः यह रोग नीचे के पत्तों से होकर तने व शाखाओं की तरफ फैलता है तथा पत्तियों की निचली सतह से शुरू होकर फफोले का रूप ले लेता है। बारिश के मौसम व अधिक नमी में यह तेजी से फैलता है। इसकी रोकथाम अल्टरनेरिया ब्लाईट की भांति करें।